झिवाछर्डाप्ताना सिकान्षाव प्याव छाळ्व

ত্যান্দিবর্দি (প্রির্জা প্লুহ্লমদ ত্যান্দির্বদি छों)

এপাং গ্রদেগন ধরিম - এবরেন

বাবা আরব দেক্সীয় ও প্লার্ডুকি ছিলেন

ब्याराप्याय (१५८० - १५८७) १७ वहर

আন্মির্রদির তক্রন্য। রক্তানের রাগ্রে তার্র ডাচ্চ রাজি পুহন্মদের তপুরের বিয়ে দেন

তকর্ন্যা - অর্মেটি বেগদ্ধ (মেহেরনুর্না),শ্বাহু বেরাদ্ধ, ত্যাদ্ধিনা বেগ্ন

भूका डेफित) अवध्याक धांत > धांत > भिवा ईकि प्रांत न

ধ্বিজাশ্যুর (মিধুজাগ্যুর সোনি খ্যান)

বিল্বাপ্রভাতকতার প্রতিক

তার র্মের বুদ্ধি ওকোমানের দুনে ছিনো শ্বর্মতানিত্যা সানাম্রির যুদ্ধে নবাবের পতনের পর প্লাইডের গার্ঘা বনে

পরিচিত হয় সিরজাগর জুরি নাম: স্লাহ্মানম (সোনির্যাদি শ্রা মর বিনারেয় ভার্মী) মৃত্যু: কুষ্ঠরোগে আরুগন্ত হয়ে ১৭৮৫ সানে মারা মায়া

ক্লার্ড (বর্বার্ট ক্লার্হ্ড)

ত্রপ বছর বম্পে হর্ন্যান্ড থেকে ভারতবর্ষে আমে

न्यापार्ख्निय भेष्य द्रिम चार्त्र एकि.

বোল্লাছ প্রার্থার্ড। জনদ্ব্যুদের বিরুদ্ধে জ্যানাভ করে কর্নেন সদবি ও প্রার্দ্রাসের ভেপুটি প্রভারর সদি পান। चार्एएव मह्यान्स्रव क्रिकाव १८य होकाद्व क्याक भारान १८ ४०

ত্যকালে ধারা যান

<u> ७भ्रार्ट्स (५२ तियान ७ भार्ट्स)</u>

ক্যান্সিম বাজ্যরের কৃঠিব পারিমানক ছিনেন তিনি। পর্মনার সিত্র্যাবাদ, ক্রিপ্রাচাত্যকতার্ তিনি জড়িত গ্রাকতেন বিভিন্ন শুড়্যন্দের কার্নে নবাব তাকে বন্দী ও স্থানে ৮৫ হুতার কথা তানালেও বাতেভেম্বদের পরামর্মে তাকে ছেছে দেওুমা হয়।

(अग्राह्स्य (अपारक्षियाम्य शक्स ७ ग्राह्स्य)

रे९५७ भक्तव तीयारितीय अर्थात हिल्तत िकी প্রাহতের সাথে সুক্র হন ইংবেভাদের বিক্রান্ত মুদ্ধ ক্রবতে। র্ন্ধ্রিটাদকে ফ্রাকি (শজ্যার পিলান্স স্কার্মনে ও প্রবিক্রাফর সার্ কর্নের ওয়ার্ছনেন করেননি তার সর্হ নকল করা হয়েছিলো। धणाष्ट्रिय त्रीक्षिय र साम धवं त्रमेस रतं यथ्यकातां सावा नाया (সন্দ জোন্ম গোর্ড্যানে তার কবরী

হলওয়েন:

পন্তনের পার্হস হারদাতান থেকে ওক্সারি পান্ধা করে হলওয়েন কোষ্ট চাকারি নিয়ে রেরতবর্ষে চলে আসেন आक्रांतर ज्यायन अवस्थं ठाव (वज्त हिस्सा ७० घ्रकाः

द्मिथ्या याम नवावाक वन्निष्कण कवा हित्ना णद्म जेफ्कार ७११२ (Black Hole Tragedy) नामक अन्य वानान जिनि

ত্তি। বিষয় (মোহারুরো) নাওগাজির মোহার্মিদ জাহ্মর ছিলের তার রাম্বী তিনি দ্বর ও ডেগ্র-ব্রাহ্মের সেবিকারি ছিলেন বাল জাসনকার্য পরিচালনা

কর্তেন ওানাপতি কুন্নে ঠা। কুন্নি আঁ এর সাথে অসেটি বেপ্রান্ত অনৈতিক সংগক ছিলো বলে নবাব কুন্দি আঁ কে হত্যা করেন

মা ওমেটি বেহার মেনে মিতে পারে নি তার সিরাজ্যকে তিনি প্রতিজ্যোর্ব- পরায়েলের দোখে দেখাতেন

পানাজ্যির মুক্ষের পর তাকে বুড়িগস্মত জ্যীতনক্ষ্যার সন্মিপুদ যেমন হত্যা করা হয়ন

(দুক(রোজার (দুক))

रिक हिला होते ने भिवेताक्ष ताव कामासाव (ज्ञाक स्राम्बाक्ष प्रेरिक स्व भिवेताक्षेत्र वाव कामासाव (ज्ञाक स्नाम्ब

द्मानिकर्धां ह

(१७३१ ठर्म।

राह्यक्षेत्राच्यं अविद्यास्था सार्त् १० प्यान्त क्रियं प्रमान कर्यं स्टिलं क्रियं स्टिलं स्टिलं क्रियं स्टिलं स्टिलं क्रियं स्टिलं स्टि

জেন সম্প্রদায়ের সানুষ্র পেজার ক্রমার্য ছিলো। (জন সম্প্রদায়ের সানুষ্র পেজার ক্রমার্য ছিলোন।

প্লিরন প্রিরজাফারের তিন প্লাতের প্রান্তি বড় মিবন তার জ্যাদেন্তের প্রিজা হারিদ (নিয়াবের ওার্ম)-কে হজে। করা হুদ। সিবাজের প্রি কুংফুরোমাকে তিনি বিধে কবাত ডেমেছিনেন তার্পেপ্রে বঙ্গাতাতে তাকানে প্লাবা যান এই কুংগিত চল্লির মিব্ন

भिवसर्गति । सिर्वसर्गति । सिर्वाप्ति । सिर्वसर्गति । सिर्वाप्ति । सिर

রোহাদ্মদি বেগ

[अञ्चाळव वावा ज्यानुक्तित व्यतम्य साराध्यक्तिक तित्व्यं अन्हातिव পতো লামন কাবেন। মাগ্র ১০.০০০ গেকাব বিনিময়ে রে ন্যায়কে হত। করে বাল্যার আরেক ধীরতাফর কম। হয় সোহালাদি বেগকে।

ুবাজেউন্নেব: বিক্রমপুরের (বিদ্য সম্প্রদায়ের লোক ছিলেন। প্রথমে তিনি (अयानित् काफ) कर्वाणनः गत् कृति थों प्रव सूर्य गत् ना उथा फिरस्य (अतामिण रम वाज्यान्त्रवा यात्म त्यापि (वशासव आत्य स्थाण संया)ण ताएं ७(६) अवर न्यायिव राजातव सकत स्रकाव बढ़यान जिति फिल्निन

वायुष्टुलार्डः विद्यावय एडपूर्वि अर्डन्य जानकीयास्य एडल दायुष्टुल्डः तवा(वर्व प्रााच्य विद्याविण प्राकाम छाव लाजातुछि १५ ति। ७११ লোপানে ষড়মণ্ডে ক্রিচ ছিকেন অন্যান্যদের রাথে। মৃতুচন্ডের তাতিয়োজে দক্তিত করা হানেও ইংক্তেব্রা তাকে বার্চ্চান ততদিনে মে নিপ্ল

न्द्रश्रात्यमाः

अद्यालिय विश्वसम्बद्धस्य सा. २०८७ माल जाएवं विवाय स्था २९७९ प्राप्त रालाक्षीव यूँकव शव तवारवव प्राष्ट्र छित अल उन्न ভারা ব্রা পাবে ও ভ্যানাদা কবা হুম ভাই নবাবের গুপ্তা তিনি দেখেননি: ১৭৭০ প্রান্সে তিনি প্রান্তা থান।

গ্রাহ্যপুল জুহালা (নান্নাথন সিংহ) তিনি ছিলেন প্রাহর্গা বুদ্ধিদানত (দেশপ্রেদিক) ক্লাইভের নির্দেজা পুলিবিদ্ধ হয়ে প্রায়া মান। তিনি বিভিন্ন বেক্সাতক্ষ্য প্রপূত্রের বস্নতেন। অপ্যতাতা আৰুসদ হন্ন কেবেণ্ডৰ দিছি কৈ ধাৰাণ্ড কএখ(৩৬৫৫)!

चात्राकारे एका जन्म

(त्रग्रस - र्यंभी (त्रग्रस कात्रक

शिकास दिश्मीय उत्रभंत्याण क्वर

सिक्तः केविटा पाल, केके ए स्ट्रेस

जिन्नस रिक्षोप न्याय (कानार्र)

त्रिक्षः स्मार्ट त्रेशियम पूर्णः

णि किम्मणुर्वेष्टम्थं शाक्त की की ज

निम्निर्धातः कारिकार्यातः ज्यातः कार्यः कार्यातः विकारितः हिस्ति। निम्निर्धातः कारिकार्यंपः निम्नातः नामिकार्यातः कार्यस्थि

ह्य काश मेल् कार्यक्षय अश्वक्र ं

मुळक्षः घवाव दुलको

ता तिहम्स १०००६४ कारत्य कारल्या स्थारप्रीय

चिष्यः मुद्दरप्राध्यम

ता न्वारिकुल १४ दूस के सुर्धा कासाल प्राधारकद्वर

मुक्तिः श्रीस्ट्रिशंग स्तिमिन्तास्य त्रास्त

त्री-व्यक्षितं शिक्ष क्षिरिया प्रहेला इन्द्रिया क्षिर्धं

प्रकाशः मुङ्गासम्बद्धाः

मा ॥ व्याया व्यावन्त्यहरू न्यहर्त व्यहित्तहरू , — कार्या

MERS BEKONIOI.

TO 18th 10 MINISTER

जी व्यानवास मूम करता आवर्जी मिल्स रिजालक! परिक्रीट काक त्या अहस्य वार्क्स स्मान्या अहस्य छ। काथाका है जाहार जिलाका इवार त्यारा काशरा पूर्व तुरकाकाब कथार्थ र এতি খঃ বিশাঞ্চ সবাধকা। ग्रिका काशाहत्ते काश्राक रिक उत्तर हाल ही केर्य अवका 951 1-७६८१५ अन्य @तम करा प्रहलन प्रवितः श्वाकाकावा क्रा कारत्व रहें हुं कार्य त्राहक व्याहारम द्रित्य कार्य प्रकथः त्रकलाचा नामगान स्वालनारित्यं निर्देश 98 ।। त्रीस तब्ह कथाय काशिक राष्ट्र काशिक रथाएव । – कन्ना दिव प्रकास्त्रधार् तिबशः दिशासि क्याल गुत्। -काक्षेत्र काल्य लाक्षरासत्त्व क्या यहमल्यन तिक्षाभी वाजन हराक्षाप गा न्वारिक्ट १४६८ ", ठैल रिक्ट्साय, - कमाद्रिकारक वरकारल्य तुल्वशः क्यामि ग्याचा

ग्वा कुर्यास क्रीम क्रिस्सित्य कर्त मिला क्रिय क्रयाख्या तिक्षशः दिवाहवाधित हाकार्य द्वाकार्य १ मिहित कारक प्रस्थाधिक व्याक्षित क्याक्षियां त्वितः द्याष्ट्र. क्रांशक्ष २०) - हु- स्वत् क्याव्यामक एक र लुखाः खलणायेन निकारं उठा म-कारिकूस श्रमकुस काष्ट्रसांत्रक कालमार्ड्स निकारिएं जे जन्म मुख्यक्ता — काववाहि एक प्रिला प्राथाः स्थाप उन्। ध्याव दुस्त्य) तुक स्थांत्व्याचे क्रियं जीव्यं गुल्हक क्याद्रित क्याद्राह पुन्तिः दिलायेच्छा तासिक्ट्रिय स्थातिक त्यासक स्थातिष् 33] rien, ने तिल्ल हाबाव दुलाब) कि हिस्स खबीशक इं मानाका क्षिक क्षिक अध्य डिली १९७ खवात व्हादाखिक कार्यय माष्ट्रिशिय न म्हारूक हमग्रावासीय अव्या उहास कारा कर देवलास प्रस्त करताराह्य त्विधः धवादिवं जात्माकिक यात्रिक प्रशासमा नाम यात्रा राख्या per aeries!

उता काया वद्यादिसादिय आधा ध्येष्ट्र क्यायाव्यं एक्ष ३: द्याधनाय चार्य उता प्रधासकाता न्यार्थी स्थलास्य कालास्य इं हिन्द्र नुसंग्राक्ष प्रधियं स्थायाष्ट्र क्याज्ञाल स्थान हिनायुर्भः उता काथा श्वाकांत कर्य नागिष्टित श्विशिवन मुक्धः खालिक्य दुसधात्रयः कात्राध्नातं अक्कियाव क्रापं स्मानिः यास 50 खार लियका स्परिएर कुमास करें प्रकारतकाशक वाम अधिकार उक्री जयाता सम्मान्य क्रिस्टिन ? निभार अधि 1001 उसाझ शालिए प्राथम राष्ट्र करिव की था रिक विस्निधं এন্ডাই ক্রমিক্র ইরজ্য तिन्नी द्रायक्षिय कार्य त्यारक तयासम् कर्य कराकालाभात्य क्या ক্রম বঞ্চিল मुख्यः स्पष्टवंत अलात रितेश्वर सार्थाः (02) कार्यमस्ट स्थालाव्याव प्रतिर कक्काय में से कथा आदवन । एकवः साध्ये वर्मकि श्राह्म अगरव सा द्वाराताल मध्य

तिक। किशिष साथि आधानी प्राक्षिमा जिलां क प्रेष्ठ १९ पाठ६५३ काला यामारिए व काला 081 मासाम लाखा क्षत्रक क्षत्रक. पुक त्रमक्ष्म र प्रविधः ". त्रीताहाळ' याल्य डकाळ्छाहा..' ०० प्रवास्त्रं प्रताधादीश्यः १०० । क्रिशः आत्रा स्मावकर्तातः किया अधारा भारतिक कारक तत स्विमार्क वार्षिक विश्व कार्य मुक्रिशः धवास्ति ५ रत्तवाद्योक्ष अत्याः आविक्रातरक। विता सामित कार्य द्वारा तिकारिक प्रांतर एक १: अप्टर्स १ स्प्रिक विमा आस्ति . धंपानी होता कारत कारत वालाहिना न काराहि त्रकाव इ प्रकार नातिहर दयहरा ७ अवस्य अवस्य १ १५६० भ क्री मुर्सित कारक त्रावाहियांचक तरल लाक्नामिक करवर्ग मुळ्यः आद्या कासमानासिस कार्वेश्व आत्या प्राव्य प्राव्य प्राव्य 80/ मासमात जवाकरामितक एक कथिक विषया उ प्रकथः मृथं आवादत यापा निभाव प्रोपेस मिल्क यक्षका 80) प्रकार्ध ताम दुल्यो स्कलास्य लाखारंग्यं प्रकाशः अन्तरात निकारात ने प्रकार अन्तरकार

85/ १७ हेिए खिरा प्रमाध ताति गत्ना प्रकार अध्य 80) प्रमाध प्रतिथार साधि शाहित स्थारित स्थारित क्रिस्टि इस् पिछांभेक्षा अग्या भावकाम १ मावकाम १ 88। "अबार्क कार्क कारत क्षेत्र — क्रांति १०० विधारिक् व ग्रिकाशास्त्र अराक्ष हता आगार हन बाक क्षेत्रक एक प्रकाशक्या रिखनः । समस्पर्पादाः हता खबान पुरासाधित न्याशिय न्यासिक्त राष्ट्रिय न्यासिक्त राष्ट्रिय न्यासिक्त मुक्सः त्राह्महूको हल्यानाक शहारीस्परिक्ष हा हिला हिला स्मालिय से सिलाय प्राप्ताय सामाय सामाय स्थाय है ब्रिस यशिक्ता – द्राक्षाद व्यावन सुद्धवं हायाव । द्वायाद्वयंत्र हिम् स्वात्र प्राथाल दिकल्या देवार्याय प्राधिक ग्राड्मण मुख्यः अहसारं, ब्रेशक त्युतिक न्याताहार र्याताहार रेग रियमित काम त्र्यार ज्यार्थ केंद्रियात श्वास्था श्वास्था श्वास्था श्वास्थ दुक्षिकुरुक्रकः BELLING ALIDEAL FARE TARRIED ALIBERTA

पुकर : काभमायात किएक! 89 हिरियात्य दुल्या प्रकागांग प्रयाजात्य कर्म्य क्यामाया क्यामाया

त्वतः स्वाव मुत्रवादित्तं। उठा-७११ उद्येश्वर काश्वासवात्वावं किह त्याविष्यं दतक्रां - वर्धित्यं

त्री काश्तिव कार्य क्षा उद्या किंग

पुत्रवश् क्षेत्रकुल कार्य किल्लुहरूक।

एक्षं ह्मवाव नुत्रंताल भागितंत्र्विक वमिल्यः । (5) नुष्य क्रमेष्ट्रहर्ति एक क्रमल्यं क्षंत्रक वमहन्त्र बार्वः क्रास्व

एक्षित यातमार सवाव क्याप्रियात्। एको द्रुद्धरियत्त्रप्रते पहिलाहित्स यानित्यो अधार कार्यमाक एक निया

एक्षेत्रः कातुर्गारम् । एह। दुनभारत्यं नाष्ट्रियारयं क्ष्मेट्टा कार्य कार्क्ट रिनम क्षेत्रस्वयं

पुल्कें अल्य्तं रत्तिक्षें। तत्ति कातं अपुरं कासाध पुष्टंत दुिएतंत पुष्टि वधा कंप्तं तत्ति कातं त्यातिक वित्तां क्षितिक पुर्वे त्याक्षेत्रः क्षित्रकाः तत्ति श्वामांत्रे शिल्प वर्तेः कावं माश्चि भ्राकुत त्यास्मात्त क्षित्रवर्तं

क्रियेंड श्रमाणी क्रियंत्रम क्रयंत्रम क्रियंत्रम क्रिय

तहा क्षेत्रकालाय लास क महिमाळ्छिका क्रुवः क्राप्सिष्यम् (१७)-कारक व्यालस्वास्य ६तक्रमाध- प्रमेश क्या . इप्ने क्रिशः आला आधिकप्राप्ति । (10) काशक व्यवः श्वामांम इंद्रधंकाशितं साक्षिमक व्यवस्थ नाशकांमक -कथेक तथा उसा विषयः वाषा सानिकप्राप्तिः नगव छश्वित त्रणी व्यक्तिमाधिवं तासक कार्यम् कार्या क्यं एवं व एकाः रकाम्पानिव कार्वानिवित्व क द्विरमण्याः प्रिकीस प्रभा : छ। त्रिकां त्रिकां प्राथित प्राथित क्रिका । Physics there is कुर्वितः १५१०० । भारत १७०० । भारत १००० । भारत डा सुक्रांत . रहिमांच ज्यादा दवाठारांत्रं त्रक्षाः क्रम्माकावं त्यायावान् प्राप्ताक श्रिमाट् त्रकृषिभाटम त्यावात त किलकाळा दम रमित काता रन्माट्न प्रतेष प्रकाणमार्हेक विरोह व्यक्षितं तिम्त्रि श्वाकांत व्यक्ति प्राधितं व कुल्वः काष्ट्र द्रविभग्ना कार्यका ह। किलन्माहिक क्षामा रमस्क रिकट्सरह्यन

() प्रकेशन्तााहुक क्रांताल क्रांची प्रविध खालाक्ष्यकः कुळधः अ-ळाताड्र द्वासी। ता त्राह्म न्याहाम निवास्ता अकरस प्रतायाद अख्य "- म्युक्षित कार्य । প্রির: ৫৫०-এখ तो कार्ट्सक के स्थित आहे। हैं कि कार्टी काला हिस्स उ रिखनः भाष्ट्रेन रिभन्न एकित रिक्षा आपेत सिलीकित्वता Pl mfero साम्री आहुल छैटिंच दिलांगांच लासरंग कार्च तालम अप्रचं कुरा है त्युंद्धिक ब्यांचा द्रियाचकर बिश ছা প্রবাধের কান্ডে ক্রাণা ক্রীথেনমেণ্ড ক্রাবেশার কলাড় ঠিনেরেখ किया दिस्तातात्रका प्राथी किया । एकाराव्यक्षम् इप्रक्रा 50/उन्न विकारम् निकारम् निकारम् । पुरुषः स्मारिष्मारंगा क्यांत्र मुद्दराच्छेत्वा 99/ ध्याद् दुर्माक्षेंग्राक्ष शाधिक कद्यवाना क्य रीं उं एकशः प्रक्रिम साम्ब्रिस एक्वर्स 95/ क्सकाकार दत्तक्रांध स्माधकार्यत्रक दक जाक क्रिसंस्य व्यक्षितः सिक्षण काि १० १तिए अं कािक किए हैकर्स कालात मुख्य उ कुरेशकारी दिल्ला

98 कार खाक क्रांट व्यक्ति है प्रेक्षाः प्रेक्षिमार्पेवः नुत्। यहिकाकाम ययना कथाउं कर्या व्यक्त हाका हात्रासा मुद्धारिक नं व्यवनः नाद्या जाणात्। नित्रियाम व्याप्ति वाका काका व्याप्ति वाका कामा क्रिस्टा प्रेडिशः पाँठ शाणात होका। 901 स्मार्ट्सक द्राहत उद्देशधासास तार्य २०० द्राया ताप उद्घयन त्राधार-१६३०३१८ :६६०१ जुहा न्धाया आळळळ त्यन्त्याच्य दाहाम्हा कथर्तन पुक्ष । ज्याना विश्व राजा । कार्यकामा , धन्यामाना , धन्यामाना , धन्यामाना , धन्यामाना , धन्यामाना , धन्यामाना , कुन् दिक दिन हिम्महर्म साम्द्रिमासियो दारीम निर्धि माक्टिक प्रकार अक्रकार १५६० 50 हत्त्व काल गाव लाघल वहात्स्वार्व विष्ठतः कार्यात्राक्षिकः व्यापात्राक्षित्वः 59 200 याक् याकाखान चिख्नाः कापीला 35 - त्राक्षाक्षे कृष्ण द्याहक कथ्नाहां क्याह त्याक्षात्त काश्राह दुब्धः जाष्ट्रक्रमाधाः

क्रिक मंब्रक

१ किवृत्र मंभिष प्राक्षतंत्वाधारं वास्त्रावाधारं वास्त्राच्या त्रिष्ठवः २००० त्यालः २० क ळात्रेवशः ज क्रिक्र हब्जाउ म्याय खाजारेच । तिकशः टाहराष्ट्रि दक्तास्मध बारि। => १०११व १ववास व्याकासकर्वा काला आका आका आका (a) काराधि एक एक दुनाजाक स्टिस्स्ड सिक्स द्वाप्यवस्त्रक, कार्य हमही, आग्र पूर्लक, वापक क हार्किन, 81 कि लाधुविभध एखिल्छ पुक्षरः अञ्चाद्यक ज्यालधासा ठार्सेल बरे बासकेत्। ती प्रुस्मार कारी लाहार कालार क्रियम क्रियम क्रियम क्रिशः निर्मिणदिशी व्यक्तिम अ ति मुशिध्रतिव त्याकार्य कााकार्य क्रिस्स्वर्ध पुळाव क्राप्तिक क्षाक्री जी कार्य क्याक्त सहसाद्धं ते ति त्यालासंत उद्गेत । तिक्षः स्पर्वशतक मुस्लितः प्रश्री स्वयापाद इर क्या म् द्राप्तम् शास्त्र कारा भिष्मात्रहेव धास १७ कल के मुसरक्रता पुरुषः -शालाक्षादः क) खालाक्षेत्र धास को व क्रियः आम्योगि क्रिमाधाः

901 खिलाम प्रवहतां थार रतनगरिक्ष्यं द्वा । त्या वाकार । सक्का REPLECION SO E WHEEL 79] थार स्मिर्स दावरिस की लिकाम क्षेत्रभं ઉજ્જાર જર્સન छ । यामुनिस्ताक कार्य काल शासकार क्या कि विधिन कार्य युक्त साद्यावश्यक्ष क्रा आकुत्रिस्य कामास्क्रिका रिक्तास्थित कामालामि कि क्षिक स्मा पुक्ष मधुलाख्यं काताय-कृतायाः <u> छ। याहित्र साकशतक साधास मुद्धा पक कथिक क्षेत्रक द्वं असंव</u> क्षांभाका अस्का छत्। अत्वर्धि व्यक्टा दिक्सि। দ্রেরাঃ কাঞ্ছানী। The man will be the second of the second সূনী প্রাজ্ঞজে প্রবাধ রহেন কর্মক আর করে। एक्षः यहराष्ट्रि ध्वराहस्य। गुर्ग अत्यक्क ध्वात अशि ठावेश्याद्वात आराश कि क्रि क्षेत्रिंग एकवः साजवन्तः। DP] -स्वाधिक लाज म्लेटक अट्रंगिश्ट व पुल्यः द्वालास कीक न्यालक कुक्र मुद्धायादानं लक्षि घरतत कांधवावेक काट्य दिक विस्थर्ध 'प्राव्हे राज्या इसक्रा उठा खाएक ब्रक्ष्यांचासा आह- कर्ष्य मार्क क्रियं वं TOUR! ALT BOTTERM.

उगिराह्मा<u>क</u> खरासिक एक लेख क्राक्तिगधर् টেজখঃ মুধ্যবিদ্যোগ্যথ 55 हैं के इमकककत्रकारक मेंग वासम्य व्यायामण প্রেম্ভঃ বিশ্বরাদ্যান্ত্র। रहा " तियात्व याक्षिम त्याक्षाय प्रति तेत ति विभी व्याक्षित्व मान विश्व क्षि प्रबंधः यह्याष्ट्र खनस्मधः १८१७ काश्य प्राक्ष्य प्राक्ष्य व्हरावाधिय प्रापाधकाशिव १९८५७ वर्षण लेखाः सीक्षणंपा उता द्वासम्बद्ध दिल्लंग सिंह ने सिंह कार्य स्थारक्षियं व দ্রেমঃ প্রেক এই। इत्ति दकामांत क्यावेशय कथित्य विराधातांत्र वायातांत्र प्रथाशक विराधातां इत्। मुदासाल्य दकाजाकांत त्यंदारा। शब्दास्त्य दत्यतं पुक्षः अध्याप्रतिष्वाधः इस् म्हाधाल अळळळळ एक ह्यास्ना कश्यंष्ठं ক্রজনঃ বিদ্যাপী ड्रेक) काव कावित्व दलवा ग्रहाल लाहाबन पुक्रवंः हिमार्यक्षारिक्षं व कारिक १८६५ हनका विद्याल काम्बरीः संधः 'शब्यातमाः कार्यकानारः अध्या